दीमक

(मंच पर एक गोल स्टूल है। नाटक शुरू होने से पहले तूतीवाला मंच पर आता है। यह जोकर की तरह सजा है। अपनी चाल के साथ-साथ वह लय में तूती बजाता हुआ आता है और स्टूल पर खड़ा हो जाता है।)

तूतीवाला : अखबार की ख़बर...

एक : *(एक तरफ से मंच पर आता है)* सरकारी गोदामों में पड़े गेहूं को घुन लग गया है। लाखों रुपये का नुकसान हो गया है। उच्चस्तरीय तफ़्तीश का हुक्म दिया गया है...

तूतीवाला : रेडियो की ख़बर...

दो : *(दूसरी ओर से मंच पर आता है)* सरकारी गोदामों में पड़े स्टेशनरी के काग़ज़ों को दीमक लग गई है, लाखों रुपये का नुकसान हो गया है। मुख्यमंत्री ने तजवीज़ ज़ाहिर की है...

तूतीवाला : टेलीविज़न की ख़बर...

तीन : *(पीछे से मंच पर आता है)* सरकारी अस्पतालों में पड़ी दवाइयों को फफूंद लग गई है। नुकसान का जायज़ा लेने के लिए कमिशन तजवीज़ किया गया है।

तूतीवाला : पर एक ख़बर किसी अखबार में नहीं आई, किसी रेडियो ने नहीं सुनाई, किसी टेलीविज़न ने नहीं दिखाई...

विजय सिंह : *(मंच पर आगे आकर)* एक नौजवान जिसका नाम विजय सिंह है, जिसके पास भारतीय यूनीवर्सिटी की एम.ए. की डिग्री है, जो पिछले चार साल से बेरोजगार है, जिसके पैरों को घुन लग गया है, जिसके हाथों को दीमक ने चाट लिया है, जिसके दिमाग में फफूंद लग गई है।

(अभिनय करता हुआ बाहर आता है।)

तूतीवाला : किसी उच्चस्तरीय तफ़्तीश का हुक्म नहीं दिया गया, किसी भी मंत्री

ने तजवीज़ ज़ाहिर नहीं की, कोई कमिशन तजवीज़ नहीं किया गया... पर क्यों?

एक : उच्चस्तर के अफ़सरों को फुर्सत नहीं।

दो : तफ़तीश कमेटी के हाथ रुके हुए हैं।

तीन : मंत्रिमंडल की मीटिंग नहीं हो सकी।

तूतीवाला : पर क्यों?

एक : उच्चस्तर के अफ़सर की भैंस मर गई।

दो : तफ़्तीश कमेटी बाहर गई है।

तीन : मंत्रिमंडल विदेश की सैर करने गया है।

सारे इकट्ठे : हा-हा-हा-

तूतीवाला : ये सब बहाने हैं।

एक : धोबी लगाते हैं, जो वक़्त पर कपड़े धोकर नहीं देते।

दो : दर्ज़ी लगाते हैं, जो वक़्त पर कपड़े सिलकर नहीं देते।

तीन : मोची लगाते हैं, जो पेशगी लेकर भी जूते नहीं देते।

तूतीवाला : तो फिर उच्चस्तर के लोग?

एक : धोबियों से बुरे।

दो : दर्जियों से निकम्मे।

तीन : मोचियों से गए गुज़रे।

तूतीवाला : तो फिर निकालो इनका जुलूस।

एक साथ : *(लय में)* बुरे, निकम्मे, गए-गुजरे-बुरे, निकम्मे, गए-गुजरे, गए-गुजरे-गए गुजरे...

(बाहर चले जाते हैं)

विजय सिंह : *(दूसरी तरफ से आता है)* पर मैं तो बात कर रहा हूं भारत के उस शहरी की जिसका नाम विजय सिंह है, जिसके पास एम.ए. की डिग्री है, जो पिछले चार साल से बेरोजगार है— हां जो चार साल से बेरोजगार है।

(बाहर आता है)

तूतीवाला : *(लम्बी तूती बजाकर)* हां, जो पिछले चार साल से बेकार है, जिसके पैरों में घुन लग गया है, जिसके दिमाग में फफूंद लग गई है, उसकी कहानी आपको मैं सुनाता हूं। यह कहानी आपकी भी है और देश के लाखों बेरोजगारों की है— चार साल पहले...

(विजय सिंह इम्तिहान देने जा रहा है)

तूतीवाला : विजय सिंह इम्तिहान देने जा रहा है ?

विजय सिंह : हां।

तूतीवाला : खिचड़ी खा ली है ?

विजय सिंह : क्यों ?

तूतीवाला : शगुन होता है।

विजय सिंह : कैसा शगुन ?

तूतीवाला : परीक्षा अच्छी होती है।

एक-दो-तीन : *(एक साथ)* हम बताते हैं परीक्षा कैसे अच्छी होती है।

तूतीवाला : तुम ?

एक-दो-तीन : *(एक साथ)* परीक्षा अच्छी होती है नकल से।

तूतीवाला : नकल से ?

एक : जेब में परची डालो।

दो : बूट में परची डालो।

तीन : जुराब में परची डालो।

तीनों : *(एक साथ)* जेब में परची डालो, बूट में परची डालो, जुराब में परची डालो।

तूतीवाला : इम्तिहान में पास होने का ताज़ा नुस्खा।

तीनों : *(एक साथ)* नकल करो,जेब में परची डालो, बूट में परची डालो, जुराब में परची डालो और पास हो जाओ-हा-हा-हा।

विजय सिंह : नहीं नहीं, यह भ्रष्टाचार है। मैं अपनी मेहनत से परीक्षा पास करुंगा।

एक : साला बेवकूफ है।

दो : साला मूर्ख है।

तूतीवाला : निकालो फिर इम्तिहान का जुलूस।

एक साथ : जेब में परची डालो, बूट में परची डालो, जुराब में परची डालो और पास हो जाओ।

विजय सिंह : मैंने इम्तिहान दिया, मैं अपनी मेहनत से पास हुआ, मुझे मेरी मेहनत का फल मिला, मैंने अ, आ से पढ़ाई शुरू की थी, अब सारे ग्रन्थ मेरी मुट्ठी में हैं। मुझे पता है कि धरती सूरज के चारों तरफ चक्कर क्यों लगाती है। मुझे मालूम है कि हाइड्रोजन बम किस सिद्धांत पर काम करता है। मुझे सुई से लेकर बड़ी से बड़ी मशीन का ज्ञान है। हां, मुझे सब तरह का ज्ञान है। हरेक सिद्धांत का ज्ञान है। हां हां, मुझे सब तरह का ज्ञान है, हरेक सिद्धांत का ज्ञान है।

(एक, दो, तीन फिर आते हैं)

एक : झूठ।

दो : ग़लत।

तीन : बकवास।

एक : तुझे किसी बात का ज्ञान नहीं।

दो : तुझे किसी सिद्धांत का इल्म नहीं।

तीन : तुझे किसी असलीयत की समझ नहीं।

तूतीवाला : क्या तुझे पता है...

एक : वज़ीर झूठे क्यों हैं ?

दो : बेईमान क्यों हैं ?

तीन : भ्रष्टाचारी क्यों हैं ?

एक : नारेबाज़ क्यों हैं ?

दो : भुलावेबाज़ क्यों हैं ?

तीन : लिफ़ाफ़ेबाज़ क्यों हैं ?

एक : दंभी क्यों हैं ?

दो : कपटी क्यों हैं ?

तीन : ढोंगी क्यों हैं ?

विजय सिंह : नहीं, मुझे नहीं पता।

तूतीवाला : तो फिर तूने...

एक : पढ़ा क्या है ?

दो : गुना क्या है ?

तीन : सीखा क्या है ?

तीनों : *(एक साथ)* पढ़ा क्या है, गुना क्या है, सीखा क्या है ?
कुछ भी नहीं— कुछ भी नहीं।
(एक साथ कहते-कहते बाहर चले जाते हैं)

विजय सिंह : पर यह सब कुछ तो सियासत है, मुझे सियासत नहीं आती, मुझे क्या पता है मिनिस्टर झूठे क्यों हैं, दंभी क्यों हैं, कपटी क्यों हैं, ढोंगी क्यों हैं, नारेबाज क्यों हैं, भुलावेबाज क्यों हैं— मैंने तो सिर्फ़ उनके भाषण सुने हैं। भाषण जो उन्होंने स्कूल के पुरस्कार वितरण समारोहों में दिए हैं।
भाषण जो उन्होंने डिग्रियां बांटते वक़्त दिए।
(मंच के पीछे से नारों की आवाज़ आती है—

'फ़खे-कौम ज़िंदाबाद' तूतीवाला एक वज़ीर को गोल स्टूल पर चढ़ाता है, बड़ी मुश्किल से। वज़ीर बूढ़ा है।)

एक : नौजवान साथियो, मैं आपके बीच आकर खुद को नौजवान महसूस कर रहा हूं। आपसे हमें बहुत आशाएं हैं, आपको देश की आज़ादी की रक्षा करनी है। यह आज़ादी हमने बहुत-सी कुर्बानियां देकर प्राप्त की है। इस आज़ादी के लिए हमारे राष्ट्रपिता ने सारी उम्र लंगोटी में बिताई और बकरी का दूध पिया, *(तालियां और नारे)* मैं इनाम जीतने वालों को बधाई देता हूं। उन्हें और मेहनत करनी चाहिए। अपना कीमती वक़्त किसी भी सियासी सरगर्मी में ज़ाया नहीं करना चाहिए, मैं अपनी ओर से अपने डिक्शनरी... मतलब कि उस... डिसकिशनरी फंड में से पांच हजार रुपये स्कूल को देता हूं। *(तालियां, नारे, 'फख़्रे कौम ज़िंदाबाद।' तूतीवाला वज़ीर को एक ओर ले जाता है और दूसरी तरफ से एक अन्य वज़ीर को ले आता है। 'शेरे-कौम ज़िंदाबाद' नारों के साथ उसे बीच के स्टूल पर चढा देता है।)*

दो : आदरणीय श्रोताओ और विद्यार्थियो, देश बड़े संकट में से गुज़र रहा है— कुछ शरारती तत्व देश की बेड़ी को डुबोना चाहते हैं, हमने इसे किनारे लगाना है— इस लाइब्रेरी का नींव पत्थर रखते हुए मैं उम्मीद करूंगा कि विद्यार्थी किताबें पढेंगे, ज्ञान लेंगे और सियासत जैसी सरगर्मियों में अपना वक़्त जाया नहीं करेंगे। मैं इस लाइब्रेरी के लिए भारतीय क्लासिक साहित्य की रचना 'किस्सा तोता-मैना' की पच्चीस कापियां डोनेट करता हूं *(तालियां, नारे)* विद्यार्थियों को चाहिए किस्सा तोता-मैना पढ़ें और सो जाएं, इस तरह ही वे देश के भविष्य की रक्षा कर सकते हैं।

(तालियां-नारे 'शेरे कौम ज़िंदाबाद'। तूतीवाला इस वज़ीर को बाहर ले जाता है, दूसरी ओर से एक और वज़ीर को ले आता है। 'शाने कौम ज़िंदाबाद' के नारों के साथ उसे मंच के बीच रखे स्टूल पर चढ़ा देता है।)

तीन : सज्जनों और सज्जनियों... आज आपको डिग्रियां देते हुए मेरा मन अति प्रसन्न है... आप इन डिग्रियों को कागज़ के टुकड़े मत समझना। ये आपका भविष्य हैं- कौम का भविष्य हैं और देश का भविष्य हैं। इन्हें कांख में दबाकर देश की सड़कों पर आ जाओ। मैं इस वक़्त

आपको कुछ और नहीं दे सकता, क्योंकि मेरे पास देने को कुछ भी नहीं, पर इस बात का मैं आप लोगों को यक़ीन दिलाता हूं कि आने वाले तीस बरसों में हम हरेक को रोज़गार देंगे।

(नारे, 'शाने कौम ज़िंदाबाद' शाने कौम ज़िंदाबाद- तूतीवाला वज़ीर को बाहर ले जाता है।)

विजय सिंह : हां, मुझे बताया गया है कि मुझे देश की आज़ादी की रक्षा करनी है, जो राष्ट्रपिता ने सारी उम्र बकरी का दूध पीकर हासिल की है। मुझे देश के भविष्य की रक्षा करनी है- इसलिए किस्सा तोता-मैना पढ़ना ज़रूरी है मुझे अपनी डिग्री कांख में दबाकर सड़कों पर घूमना शुरु कर देना चाहिए , जिस तरह देश के लाखों नौजवान घूम रहे हैं— नौकरी ढूंढ़ते, सरकारी संस्थाओं में, अर्द्ध सरकारी संस्थाओं में और ग़ैर सरकारी संस्थाओं में...

(एक कुर्सी लाकर रखता है)

यह एक सरकारी संस्थान है—

(दूसरी कुर्सी लाकर रखता है)

यह एक अर्द्ध सरकारी संस्थान है—

(तीसरी कुर्सी लाकर रखता है)

यह एक ग़ैर सरकारी संस्थान है—

(सरकारी कुर्सी की तरफ इशारा करके)

यह कुर्सी खाली है, इस कुर्सी पर बैठने वाला सरकारी कर्मचारी चाय पीने गया है। यहां का दस्तूर है कि चाय पीनी हो तो सरकारी वक़्त में, घर का सौदा सुलफ़ लाना हो तो सरकारी वक़्त में, जंगल पानी जाना हो तो सरकारी वक़्त में... तो पधार रहें हैं सरकारी कर्मचारी *(सरकारी कर्मचारी आकर कुर्सी पर बैठ जाता है) (अर्द्ध सरकारी कुर्सी की तरफ इशारा करके)* यह अर्द्ध सरकारी कुर्सी है, यहां बैठने के लिए क़ाबिलियत की ज़रूरत नहीं है, अगर राज सफेद वालों का हो तो आपके सिर पर सफेद टोपी होनी चाहिए, अगर भगवा वालों का राज हो तो आपके सिर पर भगवा पगड़ी होनी चाहिए। क-ख आता हो या अनपढ़ हो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता- *(ग़ैर सरकारी कुर्सी की तरफ इशारा करके यहां एक धार्मिक किस्म का आदमी बैठा है)* यह एक ग़ैर सरकारी संस्थान है। इसके लिए किसी सेठ का पुत्र होना ज़रूरी है, जिसके शेयरज इस संस्थान

में लगे हों। ये लोग मंदिरों में, मस्जिदों में, गुरुद्वारों में दान देकर अपनी शान बढ़ाते हैं, दानी कहलवाते हैं। इनके दिमाग में कोई न कोई फ़ितूर होता है, मिसाल के तौर पर जो इनसे पहले इस कुर्सी पर बैठा था , उसके दिमाग में फ़ितूर था कि हर वो नौजवान जो इस अदारे में नौकरी करे, उसके दाढ़ी-केश मुकम्मल हों, पर जो साहब अब बैठे हैं, उनके दिमाग का फ़ितूर है कि कोई भी दाढ़ी-केश वाला इनके अदारे में नौकर न हो। और ये लोग हैं विजय सिंह और उस जैसे लाखों लोगों की तक़दीर के मालिक...

(विजय सिंह डिग्री उठाकर सरकारी संस्थान वाली कुर्सी पर बैठे आदमी के पास जाता है-)

विजय सिंह : जनाब मुझे नौकरी चाहिए।

एक : तेरे पास कोई सिफारिश है ?

विजय सिंह : नहीं।

एक : तेरे पास पैसा है ?

विजय सिंह : नहीं।

एक : फिर तेरे पास है क्या ?

विजय सिंह : जनाब, मेरे पास डिग्री है।

एक : *(मज़ाक से हंसते हुए)* इस कागज़ के टुकड़े का हवाई जहाज़ बना ले।

विजय सिंह : हवाई जहाज़ ?

एक : हां, कागज़ का हवाई जहाज़, जो क्लास में लड़के आगे बैठी लड़कियों पर फेंकते हैं— हा-हा-हा।

(तूतीवाला तूती बजाता है, विजय सिंह अगली कुर्सी के पास जाता है)

विजय सिंह : जनाब मुझे नौकरी चाहिए।

दो : पिता क्या करते हैं ?

विजय सिंह : एक साधारण शहरी हैं।

दो : किसी वज़ीर से वाकफ़ियत है ?

विजय सिंह : नहीं जी।

दो : तो तेरे पास क्या है ?

विजय सिंह : जी मेरे पास डिग्री है।

दो : इस कागज़ के टुकड़े की नाव बना ले।

विजय सिंह : नाव ?

दो : जब बारिश आए तो नालियों में ठेलकर तमाशा देखना।

(तूतीवाला तूती बजाता है, विजय सिंह तीसरी कुर्सी के पास जाता है)

विजय सिंह : जी मुझे नौकरी चाहिए।

तीन : तूने तो केश रखे हैं।

विजय सिंह : जी।

तीन : तूने तो दाढ़ी रखी हुई है।

विजय सिंह : जी।

तीन : तो फिर तू अगली दुकान पर जा।

विजय सिंह : जी मेरे पास डिग्री है।

तीन : इसकी कलगी बना ले।

विजय सिंह : कलगी ?

तीन : सिर पर लगाकर सड़कों पर घूमना- बड़ा सुंदर लगेगा- हा-हा-हा।

(विजय सिंह बेबस सा खड़ा है- तूतीवाला तूती बजाता है।)

तूतीवाला : तो फिर निकाल दो, इन कुर्सियों के मालिकों का जुलूस- 'कुर्सी के मालिक' 'हाय-हाय'- 'कुर्सी के मालिक' 'हाय-हाय' *(नारे लगाते हैं- तीनों कुर्सियां उठाकर बाहर जाते हैं।)*

विजय सिंह : और मैं सड़कों पर भटकने लगा, हैरान परेशान, खस्ताहाल। अख़बारों में नौकरियों केविज्ञापन पढ़ता, इंटरव्यू पर जाता और मायूस होकर वापिस आ जाता- मेरी मायूसी इतनी बढ़ गई कि मैं इंटरव्यू पर पूछे जाने वाले सवालों के जवाब भी ऊटपटांग देता... सही जवाब देने पर कौन सी नौकरी मिल जानी है। क्यों नहीं इन लोगों से दो बातें सीधी करूं, जो मेरी तक़दीर के मालिक बने बैठे हैं।

(तूतीवाला तूती बजाता है और तीन कुर्सियां इंटरव्यू के लिए लगाता है।)

तूतीवाला : और पधार रहा है इंटरव्यू बोर्ड... ये चेयरमैन साहब हैं... यह ओहदा इन्हें इसलिए मिला है कि ये हुकूमती पार्टी के सरकर्दा हैं— यह ओहदा इन्हें इसलिए दिया गया है कि अगर ये बाहर रहते तो दलबदलू फ़ौज में शामिल होकर किसी वक़्त भी हुकूमत का तख्ता पलट सकते थे, इसलिए इन्हें इस ओहदे पर बैठाकर बहलाया गया है... दूसरे मेंबर भी किसी के सगे संबंधी हैं— से सब खाते पीते घरों

से हैं... बेरोज़गारी नाम की चीज़ का इन्हें कोई तजुरबा नहीं। इसलिए इंटरव्यू इनके लिए शग़ल है।

(बोर्ड का चेयरमैन घंटी बजाता है और विजय सिंह आता है)

एक : तेरा नाम ?

विजय सिंह : विजय सिंह।

दो : बहुत बढ़िया नाम है।

विजय सिंह : अगर आपको अच्छा लगता है तो आप रख लो।

(दो की बेइज़्ज़ती होते देखकर एक और तीन मुस्कुराते हैं।)

तीन : विजय सिंह तुमने किस जंग में विजय हासिल की ?

विजय सिंह : अभी तक जंग लड़ने का मौक़ा नहीं मिला।

दो : अगर मौक़ा मिले ?

विजय सिंह : अगर मौक़ा मिले तो मैं कुर्सियों पर बैठे लोगों की गर्दनें उतार दूं।

(तूतीवाला तूती बजाता है)

एक : तेरी क्वालीफिकेशन ?

विजय सिंह : अर्ज़ी के साथ लिख रखी है।

दो : तुम्हें डिग्री मिले चार साल हो गए हैं ?

विजय सिंह : जी।

तीन : चार साल तुम क्या करते रहे ?

विजय सिंह : जी हवाई जहाज़ उड़ाता रहा।

तीनों : *(एक साथ)* हवाई जहाज़ ?

विजय सिंह : बारिश के पानी में बेड़िया ठेलता रहा।

तीनों : *(एक साथ)* बेड़ियां ?

विजय सिंह : कलगी लगाकर सड़कों पर घूमता रहा।

तीनों : *(एक साथ)* कलगी ?

विजय सिंह : दरअसल जब मैं पहली बार नौकरी की तलाश में गया तो मुझे कहा गया कि मैं डिग्री के कागज़ का हवाई जहाज़ बना लूं, दूसरी बार नौकरी के लिए गया तो कहा गया कि डिग्री के काग़ज़ की नाव बनाकर बारिश के पानी में उसका तमाशा देखूं, तीसरी जगह गया तो कहा गया कि इसकी कलगी बनाकर सिर पर लगा लूं।

एक : बड़ी दिलचस्प बात है।

दो : बड़ी अजीब बात है।

तीन : क्वाइट इंटरेस्टिंग।

विजय सिंह : हां जी, बहुत ही दिलचस्प बात है, बाइ-द-वे आपने कभी जहाज़ उड़ाया है ? बारिश होने पर नाव तैराकर तमाशा देखा है ? कलगी लगाकर सड़कों पर गश्त की है ? नहीं की होगी, सब कुछ करके देखो, बड़ी अजीब बात, बहुत ही दिलचस्प है, मोरओवर इटज़ क्वाइट इंट्रस्टिंग।

(तूतीवाला तूती बजाता है)

एक : क्या तू जानता है यूथांट कौन था ?

विजय सिंह : यूथांट चार हैं- एक कबड्डी का प्लेयर था, एक मांडले का मेयर था, एक लीडर था, एक पलीडर था, आप किसकी बात कर रहे हो ?

दो : जो यू.एन.ओ. का महासचिव था।

विजय सिंह : किसी वक़्त जानता था पर अब नहीं जानता।

तीन : क्या मतलब ?

विजय सिंह : जब मैंने नई डिग्री ली थी, तब मेरे दिल में उमंग थी, ज़िंदगी के लिए उम्मीद थी तो मैं बहुत सारे लोगों को जानता था, मैं जवाहर लाल नेहरु को जानता था, इंदिरा गांधी को जानता था, मोरार जी देसाई को जानता था, पर अब मैं किसी को नहीं जानता। वाइ-द-वे यूथांट जानता है कि विजय सिंह कौन है ?

एक : नहीं।

दो : वो किस तरह जान सकता है ?

तीन : उसे क्या ज़रूरत है, यह सब कुछ जानने की ?

विजय सिंह : ये हुई न बात- अगर यूथांट को ज़रूरत नहीं कि विजय सिंह को जाने तो विजय सिंह को क्या ज़रूरत पड़ी है कि वह यूथांट को जाने।

(तूतीवाला तूती बजाता है)

हां अगर इंदिरा गांधी को यह नहीं पता कि विजय सिंह नाम का कोई नौजवान है जिसे डिग्री लिए चार साल हो गए हैं तो विजय सिंह को क्या पड़ी है कि वह अपने दिमाग पर इस बात का बोझ डाले कि इंदिरा गांधी कौन है...

तीनों : पर हम यूथांट की बात कर रहे हैं...

विजय सिंह : मैं बात विज़य सिंह की कर रहा हूं-

तीनों : तू जा जहन्नुम में

(तीनों कुर्सियों से उठ जाते हैं)

विजय सिंह : मैं पहले कौन-सा स्वर्ग का आनंद ले रहा हूं।

(तीनों बाहर जाते हैं)

तूतीवाला : इंटरव्यू का बाजा बज गया।
बोर्ड उठकर भाग गया।
तूतीवाला बोल गया।
सारी पोल खोल गया।

विजय सिंह : और ज्यों-ज्यों वक़्त बीतता गया, मैं एक आग में जलने लगा, अपने ही गुस्से की आग में। पर कोई नहीं था जो मेरी ओर ध्यान देता, सब अपनी-अपनी तूती बजा रहे थे। हर रोज़ नई से नई ख़बर आती- कभी दो फकीर लड़ पड़े, कभी दो मज़हब लड़ पड़े।

तूतीवाला : सुनो, सुनो, सुनो- लड़ाई हो गई, फसाद हो गया, दंगा हो गया, रब्ब चौराहे में नंगा हो गया... गुरु कौन बड़ा, अवतार कौन बड़ा, सब गोरख धंधा हो गया- लड़ाई हो गई- फसाद हो गया, दंगा हो गया, रब्ब चौराहे में नंगा हो गया।

(तीनों झगड़ते हुए आते हैं)

एक : हमारा गुरु अवतार है।

दो : हमारा गुरु अवतारों का अवतार है।

तीन : हमारा गुरु अवतारों के अवतारों का अवतार है।

एक : तू हमारे गुरु को नीचा दिखाता है?

दो : तू हमारे गुरु की बेइज़्ज़ती करता है?

तीन : तू हमारे गुरु की खिल्ली उड़ाता है?

एक : मार दूंगा।

दो : गर्दन उतार दूंगा।

तीन : दांत तोड़ दूंगा।

एक : आ मारकर देख।

दो : तू गर्दन उतारकर देख।

तीन : दांत तोड़कर तो देख।

(लड़ते हैं, तूतीवाला तूती बजाता है, लड़ाई तेज़ होती है, तूती भी तेज़ होती है- और फिर लम्बी तूती बजाकर लड़ाई को रोकता है)

विजय सिंह : *(एक ओर से आता है)* अरे अवतारों के नाम पर लड़ने वाले जांबाज सूरमाओ, बहादुरो, यह तो बताओ मेरा क्या होगा?

तीनों : तेरा?

विजय सिंह : मैं विजय सिंह, जिसके पास भारतीय यूनिवर्सिटी की डिग्री है। जो पिछले चार साल से बेरोजगार है, जिसके हाथों को घुन लग गया है, पैरों को दीमक लग गया है, दिमाग को फफूंद लग गई है।

एक : अरे चुप हो जा।

दो : सिर मत खा।

तीन : बकवास मत कर।

तीनों : यहां अवतारों की गड़बड़ हो गई है, ये डिग्री लिए फिरता है।

(तीनों लड़ते हुए वापिस जाते हैं)

तूतीवाला : *(तूती बजाकर)* लड़ाई हो गई, फसाद हो गया, दंगा हो गया, रब्ब चौराहे में नंगा हो गया- गुरु कौन बड़ा, अवतार कौन बड़ा, सब गोरख धंधा हो गया, रब्ब चौराहे में नंगा हो गया।

विजय सिंह : हां, सब गोरख धंधा हो गया, मैं किस रब्ब का पल्ला पकडूं? सारे रब्ब बड़े हो गए हैं, सारे रब्ब नंगे हो गए हैं- मैं क्या करूं, मेरे हाथ दीमक ने खा लिए, मेरे पैरों में दीमक लग गई, मेरा दिमाग दीमक ने चाट लिया है...

तूतीवाला : विजय सिंह, दीमक का एक ही इलाज है, उस जगह को फूंक दो जहां से ये जन्म लेती है...

विजय सिंह : फूंक दूं?

तूतीवाला : हां फूंक दो।

(तूतीवाला लम्बी तूती बजाता है। विजय सिंह के चेहरे पर रोष भरा प्रभाव आता है)

विजय सिंह : हां दीमक का एक ही इलाज है...

आग-आग-आग

(आग, आग की आवाज़ चारों ओर से ऊंची होनी शुरू हो जाती है... तीनों पात्र मंच पर आते हैं, जिस तरह उनके कपड़ों में आग लगी हो- वे बिलखते हैं, तूतीवाला तूती बजाता रहता है... तीनों बिलखते हुए गिर जाते हैं।)

विजय सिंह : हां, दीमक का एक ही इलाज है— आग, आग, आग...

(तूती की लम्बी आवाज़ के साथ नाटक समाप्त होता है।)